



जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग - एक सिंहावलोकन

डॉ. शिव कुमार सिंह

एसो. प्रोफेसर भूगोल

राजेंद्र प्रसाद पी जी कॉलेज मीरगंज (बरेली)

(उत्तर प्रदेश) भारत

सारांश:—

घंटा घुंघरू उद्योग एक पारंपरिक शिल्प है जो सदियों से भारत के उत्तर प्रदेश के एटा जिले के एक शहर जलेसर में प्रचलित है। यह शहर राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित है, जो राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली से लगभग 170 किलोमीटर दूर है। उद्योग में छोटी घंटियों और पायल का उत्पादन शामिल है, जिनका उपयोग विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक समारोहों के साथ-साथ सजावटी उद्देश्यों के लिए किया जाता है। जलेसर मुख्य रूप से ग्रामीण आबादी वाला एक छोटा शहर है, और कृषि कई वर्षों से स्थानीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार रही है। जलेसर में घंटी बनाने का शिल्प कारीगरों की पीढ़ियों के माध्यम से पारित किया गया है, और पारंपरिक तकनीकों और तरीकों का अभी भी उत्पादन प्रक्रिया में उपयोग किया जाता है। यद्यपि उद्योग काफी हद तक विकेंद्रीकृत है, जिसमें छोटे पैमाने के उत्पादक अपने घरों और लघु कार्यशालाओं में काम कर रहे हैं। जलेसर में उत्पादित घंटियाँ और घंघरू अपनी अनूठी ध्वनि और गुणवत्ता के लिए ख्याति प्राप्त हैं, और न केवल भारत में बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों में भी इसकी मांग बनी हुई है। तथापि आज औद्योगिक एवं तकनीकी के परिवर्तित स्वरूप ने जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग के समक्ष कई चुनौतियों रख दी हैं, परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर मशीनकरण से बने उत्पादों से प्रतिस्पर्धा और शिल्प को आगे बढ़ाने के लिए कुशल कारीगरों को खोजने एवं उन्हें संरक्षित रखने में अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है, किन्तु अब एक जनपद एक उत्पाद में इस

डॉ. शिव कुमार सिंह

1Page



उद्योग का चयन होने से और स्थानीय उद्यमियों के प्रयासों तथा सरकार और अन्य हितधारकों के समर्थन के कारण, उद्योग पुनः फल-फूल रहा है।

आज, घंटा घुंघरू उद्योग जलेसर की स्थानीय अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख योगदानकर्ता है, जो स्थानीय जनसंख्या के लिए रोजगार के अवसर और आय पैदा कर रहा है, जिससे घंटी बनाने के पारंपरिक शिल्प को संरक्षित करते हुए क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को बचाते हुए इस परम्परा और आगे ले जाने में उद्यमियों व सरकार भी कमर बांधे हुए है।

विषय का महत्व और प्रासंगिकता:—यह एक पारंपरिक शिल्प से सम्बन्धित उद्योग है जो पीढ़ियों से प्रचलित है और इसने क्षेत्र के लोगों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। जहां एक ओर उद्योग ने घंटी बनाने के पारंपरिक शिल्प को संरक्षित करने और क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ाया है वहां दूसरी ओर घंटा घुंघरू उद्योग जलेसर और आसपास के क्षेत्रों में कई लोगों के लिए आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है। उद्योग हजारों लोगों के लिए रोजगार के अवसर और आय प्रदान करता आया है, विशेष रूप से समाज के हाशिए के वर्गों से। इससे क्षेत्र में लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने और गरीबी के स्तर को कम करने में मदद मिली है। आज घंटा घुंघरू उद्योग ने क्षेत्र और पूरे देश के समग्र आर्थिक विकास में अपना योगदान दिया है। उद्योग न केवल उत्पादकों के लिए, बल्कि मूल्य श्रृंखला में शामिल व्यापारियों और अन्य हितधारकों के लिए भी आय उत्पन्न करता है। साथ ही उद्योग ने इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने में भी मदद की है, दुनिया भर से आगंतुक पारंपरिक शिल्प को देखने और उत्पादों को खरीदने के लिए आते हैं। वर्तमान में घंटा घुंघरू उद्योग लघु और कुटीर उद्योगों की आर्थिक वृद्धि और विकास में योगदान करने की क्षमता का एक अच्छा उदाहरण होने के साथ ही उद्योग काफी हद तक विकेंद्रीकृत भी है, जिसमें छोटे पैमाने के उत्पादक अपने घरों और छोटी कार्यशालाओं से भी काम कर रहे हैं, जिससे उद्यमिता और स्वरोजगार को बढ़ावा देने में मजबूती मिली है, खासकर महिलाओं और समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों के बीच।

अंततः आज घंटा घुंघरू उद्योग पारंपरिक शिल्प और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देने की आवश्यकता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, किन्तु आधुनिक तकनीक और वैश्वीकरण के आगमन के साथ, पारंपरिक शिल्प और कौशल खो जाने के खतरे से भी वाकिफ है इसलिए जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग एक उदाहरण के रूप में कार्य करते हुए



एक पारंपरिक शिल्प को कैसे संरक्षित और बढ़ाया जा सके जिससे वह समाज के समग्र विकास में योगदान की भूमिका को सुनिश्चित कर सके।

उद्देश्य और क्षेत्र:—जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग पर अध्ययन का उद्देश्य उद्योग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आर्थिक योगदान, सामाजिक—सांस्कृतिक प्रभाव और भविष्य की संभावनाओं का गहन विश्लेषण प्रदान करना है। इस अध्ययन से उद्योग के विभिन्न आयामों का पता लगाना है, जिसमें एक पारंपरिक शिल्प के साथ—साथ इसके सामाजिक व आर्थिक महत्व का पता लगाने का प्रयास है। जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग के उन विभिन्न पहलुओं को भी शामिल करना है जो उद्योग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व इसके विकास का पता लगा कर उन कारकों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जायेगा।

उद्योग की उत्पत्ति और विकास:—जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग का एक समृद्ध इतिहास है जो कई सदियों पुराना है। घंटी बनाने की कला इस क्षेत्र में पीढ़ियों से चली आ रही है और यह क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। देखा जाय तो जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग की उत्पत्ति मुगल युग से ही है। उस समय के दौरान, घंटी बनाने का शिल्प मुख्य रूप से इस क्षेत्र में रहने वाले मुस्लिम कारीगरों द्वारा किया जाता था। घंटियाँ पारंपरिक तकनीकों का उपयोग करके बनाई गई थीं और धार्मिक समारोहों, विवाह जुलूसों और अन्य शुभ अवसरों सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाती थीं। समय के साथ—साथ जलेसर में घंटी बनाने की कला में घुंघरूओं के उत्पादन को शामिल करने के लिए विकसित किया गया, जो कथक और भरतनाट्यम जैसे पारंपरिक भारतीय नृत्य रूपों में उपयोग की जाने वाली छोटी घंटियाँ हैं। घुंघरू का उत्पादन जलेसर में घंटी बनाने के उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया और इन पारंपरिक शिल्पों के लिए तत्कालीन बाजार का विस्तार करने में भी मदद मिली।

जहां ब्रिटिश युग के दौरान, जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग में गिरावट का अनुभव हुआ, क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने पारंपरिक शिल्प के उपयोग को हतोत्साहित किया और इसके बजाय मशीन से बने उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा दिया। वहीं 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के आगमन के साथ, पारंपरिक शिल्प को बढ़ावा देने और क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने में नए सिरे से रुचि पैदा हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग ने पुनः विकास की राह पकड़ ली। भारत सरकार ने भी पारंपरिक शिल्प को बढ़ावा देने के महत्व को पहचाना और प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विपणन सहायता और वित्तीय सहायता जैसी सुविधाएँ इस उद्योग को प्रदान करन



शुरू कर दीं। जिसके फलस्वरूप आज, जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग एक फलता-फूलता उद्योग है जो इस क्षेत्र के हजारों लोगों के लिए आय और रोजगार के अवसर पैदा करता है। उद्योग नए उत्पादों और तकनीकों को शामिल करने के लिए विकसित हुआ है, जैसे कि पीतल और अन्य धातुओं का उपयोग, और दुनिया भर के ग्राहकों को शामिल करने के लिए अपने बाजार का विस्तार किया है। उद्योग द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों के बावजूद, यह फलता-फूलता रहता है और क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान देता है।

उद्योग में पारंपरिक तरीके और तकनीकें:—जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग पारंपरिक तरीकों और तकनीकों के उपयोग के लिए जाना जाता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। इन तकनीकों को समय के साथ परिष्कृत भी किया गया है और इसने घंटी बनाने की एक अनूठी शैली बनाने में मदद की है जो इस क्षेत्र के लिए विशिष्ट है। उद्योग में उपयोग की जाने वाली कुछ पारंपरिक विधियों और तकनीकों में—कास्टिंग, हैमरिंग, नक्काशी, पॉलिशिंग और ट्यूनिंग प्रमुख हैं। वर्तमान में आधुनिक तकनीक और मशीनरी का समावेश के साथ, दक्षता और उत्पादकता में वृद्धि हुई है, साथ ही साथ पारंपरिक कच्चे माल, जैसे पीतल और कांसे, समय के साथ और महंगे हो जाने के कारण कई निर्माताओं ने लोहा और एल्यूमीनियम जैसी सस्ती सामग्री का उपयोग करना आरम्भ कर दिया है परिणाम स्वरूप उत्पादित घंटियों की गुणवत्ता और आवाज में बदलाव आया है। इन घटनाक्रमों और परिवर्तनों का जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। जबकि इनमें से कुछ परिवर्तनों से दक्षता और उत्पादकता में वृद्धि हुई है, अन्य का उत्पादन की गई घंटियों की गुणवत्ता और ध्वनि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इन चुनौतियों के बावजूद, उद्योग समय के साथ फलता-फूलता और विकसित होता रहा है।

अर्थव्यवस्था—घंटा घुंघरू उद्योग भारत में स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है। वर्ष 2018-19 में लगभग +2.3 बिलियन पीतल धातु निर्यात में इस उद्योग का भी योगदान रहा है:—उद्योग जलेसर और आसपास के क्षेत्रों की जनसंख्या को रोजगार प्रदान करता है। इनमें से कई श्रमिक कुशल कारीगर भी हैं जो पीढ़ियों से घंटियों के उत्पादन में योगदान दे रहे हैं। जलेसर के विभिन्न प्रकार के घंटा घुंघरू दुनिया भर के देशों को भी निर्यात किये जाते हैं। जो देश के लिए विदेशी मुद्रा के साथ-साथ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। यहां का घंटा घुंघरू अपनी प्रसिद्धि के कारण पर्यटन को भी बढ़ावा दे रहा है अर्थात् घंटियों के उत्पादन को देखने और उन्हें स्मृति चिन्ह के रूप में खरीदने के लिए दे"ी-विदे"ी से पर्यटक यहां आते हैं। जो स्थानीय अर्थव्यवस्था

डॉ. शिव कुमार सिंह

4P age



के लिए अतिरिक्त आय प्रदान करता है। वैसे तो घंटा घुंघरू उद्योग का एक लंबा इतिहास रहा है और यह जलेसर और भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी रहा है। पारंपरिक तरीकों और तकनीकों का उपयोग करके घंटियों के निरंतर उत्पादन के माध्यम से इस विरासत को संरक्षित रखा गया है। जिसके फलस्वरूप घंटा घुंघरू उद्योग जलेसर और आसपास के क्षेत्रों के लोगों के लिए रोजगार और आय पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जिससे लगभग दस हजार क्षेत्रीय लोगों के लिए आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत बना हुआ है।

उद्योग को प्रभावित करने वाले:—जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग का क्षेत्र में संबंधित उद्योगों और क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। यहाँ कुछ प्रमुख तरीके दिए गए हैं जिनसे उद्योग अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करता है:— जलेसर की मिट्टी, जलवायु के साथ-साथ कच्चे माल के आपूर्ति यथा— पीतल, तांबा और लोहे की आवश्यकता होती है, एक प्रमुख उपभोक्ता होने के कारण इन सामग्रियों की मांग घंटियों की मांग से सीधे प्रभावित होती है। परिवहन भी घंटा घुंघरू उद्योग से प्रभावित होता है। जलेसर में उत्पादित घंटियों को भारत के विभिन्न हिस्सों और दुनिया भर में पहुँचाया जाता है, जिससे परिवहन सेवाओं की मांग पैदा होती है। इसमें सड़क परिवहन और शिपिंग सेवाएं दोनों शामिल हैं, जो अन्य देशों में घंटियों के निर्यात के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटन, स्थानीय हस्तशिल्प आदि घंटा घुंघरू उद्योग को प्रत्यक्ष प्रभावित करते हैं।

नवीनतम तकनीकों और प्रक्रियाओं में परिवर्तन:—जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग में समय के साथ उत्पादन तकनीकों और प्रक्रियाओं में कई बदलाव हुए हैं, जैसे कि तकनीकी प्रगति, ग्राहकों की बदलती पसंद और बाजार की मांग जैसे विभिन्न कारकों के परिणामस्वरूप। यहाँ कुछ प्रमुख परिवर्तन हैं जो उद्योग में हुए हैं:— मशीनरी का उपयोग, वृहद स्तर पर उत्पादन, नवीन सामग्रियों का समावेश, उत्पाद में विविधता, आधुनिक तकनीक का उपयोग जिसमें कम्प्यूटर द्वारा 3 डी (बाक) द्वारा उपयोग कर उत्पाद को ढालने या आकार देने के लिए मोल्ड बनाने के लिए किया जा सकता है। इससे डिजाइन प्रक्रिया को तेज करने और प्रत्येक घंटी के उत्पादन में लगने वाले समय को कम करने में मदद मिली है। जलेसर में उत्पादित घंटियों की गुणवत्ता पर भी प्रौद्योगिकी के उपयोग का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। सीएडी सॉफ्टवेयर और अन्य उन्नत डिजाइन टूल के साथ, निर्माता अधिक सटीक और जटिल डिजाइन बना सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप घंटियाँ अधिक विस्तार और दृश्य अपील के साथ होती हैं। इसके अतिरिक्त, स्वचालित मशीनरी के उपयोग ने उत्पादन प्रक्रिया में निरंतरता सुनिश्चित करने, मानवीय त्रुटि की संभावना को कम करने और अधिक



समान और सुसंगत उत्पादों का उत्पादन करने में मदद की है। इसके अतिरिक्त उत्पादन-संबंधी तकनीकों के अलावा, आधुनिक संचार और विपणन तकनीकों ने भी उद्योग में भूमिका निभाई है। उदाहरण के लिए, निर्माता अब व्यापक दर्शकों तक पहुंचने और अपने उत्पादों को सीधे उपभोक्ताओं को बेचने के लिए सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सकते हैं।

उद्योग का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव:- घण्टा घुंघरू उद्योग का जलेसर के सामाजिक ताने-बाने पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, जो इसके नागरिकों के दैनिक दिनचर्या से लेकर क्षेत्र की बड़ी सांस्कृतिक पहचान तक सब कुछ प्रभावित करता है। इस उद्योग के सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभावों में से एक रोजगार के अवसरों का सृजन रहा है। उद्योग क्षेत्र में हजारों लोगों के लिए काम प्रदान करता है, जिनमें से कई अन्यथा रोजगार खोजने के लिए संघर्ष करेंगे। इसने जलेसर में कई परिवारों के जीवन स्तर में सुधार करने में मदद की है, उन्हें एक स्थिर आय और सुरक्षा की भावना प्रदान की है। वैसे तो जलेसर की सांस्कृतिक पहचान को आकार देने में उद्योग जगत की अहम् भूमिका रही है जिसमें से घंटा घुंघरू अर्थात् घंटियों की आवाज इस क्षेत्र में दैनिक जीवन का एक सर्वव्यापी हिस्सा बन चुकी है, और जलेसर की सांस्कृतिक विरासत का भी प्रतीक बन गई है। मंदिर की पूजा से लेकर लोक संगीत और नृत्य प्रदर्शन तक, विभिन्न प्रकार के धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में घंटियों का उपयोग किया जाता रहा है। परिणामस्वरूप, घंटा घुंघरू उद्योग जलेसर की सांस्कृतिक पहचान के रूप में देखता है।

यह उद्योग क्षेत्र के आर्थिक विकास में योगदान देकर जलेसर के सामाजिक ताने-बाने पर भी व्यापक प्रभाव डाल रहा है। जैसे-जैसे उद्योग बढ़ा और समृद्ध हुआ है, इसने जलेसर के लोगों में गर्व और आशावाद की भावना पैदा करने में मदद की है। इसने अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण और समुदाय की एक बड़ी भावना में योगदान दिया है, क्योंकि लोग उद्योग और एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए एक साथ आए। यद्यपि, इसी समय, उद्योग के कुछ नकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी पड़े हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण श्रम का शोषण है, जो उद्योग में एक सतत मुद्दा रहा है। कई श्रमिकों को कम वेतन दिया जाता है और वे कठिन परिस्थितियों में लंबे समय तक काम करते हैं, जिससे कई तरह की स्वास्थ्य और सामाजिक समस्याएं भी उत्पन्न हुई हैं। अन्ततः घंटा घुंघरू उद्योग का जलेसर के सामाजिक ताने-बाने पर एक जटिल और बहुआयामी प्रभाव पड़ा है।



जहां एक ओर इस उद्योग ने क्षेत्र के आर्थिक विकास और सांस्कृतिक पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, तो दूसरी ओर इसके कुछ नकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी परिलक्षित हुए हैं यथा—

प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग और उनका संरक्षण:—जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग प्राकृतिक संसाधनों, विशेष रूप से तांबे, पीतल और लोहे जैसी धातुओं पर बहुत अधिक निर्भर करता है, जिनका उपयोग घंटियों को बनाने के लिए किया जाता है। उद्योग घंटियों के फ्रेम के लिए लकड़ी का उपयोग करता है, और घंटियों को चमकाने और खत्म करने के लिए विभिन्न रसायनों का उपयोग करता है। जबकि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग उद्योग के लिए आवश्यक है, यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि इन संसाधनों का उपयोग स्थायी और जिम्मेदार तरीके से किया जाए। हाल के वर्षों में, उद्योग के पर्यावरणीय प्रभाव और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में चिंता बढ़ रही है। घंटियों के फ्रेम के लिए लकड़ी का उपयोग चिंता के मुख्य क्षेत्रों में से एक है। लकड़ी एक मूल्यवान प्राकृतिक संसाधन है जिसकी फर्नीचर, निर्माण और ईंधन सहित कई उद्देश्यों के लिए उच्च मांग होने के कारण घंटा घुंघरू उद्योग में लकड़ी के उपयोग के स्थान पर अन्य पर्यावरणीय अनुकूल सामग्री पर जोर दिया जाना चाहिए। लकड़ी के उपयोग के अलावा उद्योग में रसायनों के उपयोग को लेकर भी चिंताएं हैं। घंटियों को चमकाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले कई रसायन पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं जिनका उचित उपयोग और निपटारा किये जाने में कोई भी समझोता नहीं होना चाहिए। यद्यपि इस समस्या के लिए, कुछ निर्माताओं ने पर्यावरण के अनुकूल रसायनों का उपयोग करना और अधिक कठोर अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं को लागू करना शुरू भी कर दिया है। जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग में यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि इन संसाधनों का उपयोग स्थायी और जिम्मेदार तरीके से किया जाए। अधिक पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को अपनाने और वैकल्पिक सामग्रियों की खोज करके, उद्योग प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने और इसके पर्यावरणीय पदचिह्न को कम करने में मदद कर सकता है।

उद्योग का पर्यावरणीय प्रभाव:—कई अन्य उद्योगों की तरह, जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग भी बड़ी मात्रा में अपशिष्ट उत्पन्न करता है और यदि ठीक से प्रबंधित नहीं किया गया तो प्रदूषण में योगदान कर सकता है। उद्योग द्वारा उत्पन्न कई प्रकार के अपशिष्ट हैं, जिनमें शामिल हैं :—धातु अपशिष्ट, रासायनिक अपशिष्ट, जल प्रदूषण इत्यादि। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि भारत के केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा निर्दिष्ट



खतरनाक अपशिष्ट और अपशिष्ट जल के प्रबंधन के लिए दिशानिर्देश स्थापित किए हैं, जिनका पालन करना सभी निर्माताओं के लिए आवश्यक है।

उपरोक्त के अतिरिक्त वर्तमान में नवीन समस्याओं का भी सामना इस उद्योग के लिए चुनौती बनता जा रहा है जैसे— उपभोक्ताओं की पसंद में बदला, पर्यावरणीय जागरूकता, आधुनिकतम तकनीक का अभाव उचित मजदूरी न मिलने के कारण कुशल श्रमकों की कमी इत्यादि कारक इस उद्योग के विकास में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं।

परिणामस्वरूप इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, उद्योग को नवाचार, स्थिरता और दक्षता पर ध्यान देने की तुरन्त आवश्यकता है। साथ ही निर्माताओं को अपने संचालन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार के लिए आधुनिक तकनीक, स्वचालन और पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं में निवेश करने की आवश्यकता ही नहीं अपितु अनिवार्यता होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, युवा पीढ़ी को प्रशिक्षण और शिक्षा प्रदान करते हुए स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए इन शिल्पों के महत्व के बारे में भी जागरूकता पैदा करके पारंपरिक शिल्प और कौशल को बढ़ावा देने और संरक्षित करने की अनिवार्यता है। अंत में, सबसे महत्वपूर्ण तथ्य— निर्माताओं, सरकार और गैर-सरकारी संगठनों के बीच सहयोग द्वारा चुनौतियों का समाधान ढूंढ कर एक स्थायी और प्रतिस्पर्धी उद्योग की दिशा में काम करने के लिए तत्पर होना है।

विकास और विस्तार के अवसर:—जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों के बावजूद, विकास और विस्तार के कई अवसर हैं जैसे—विविधीकरण का पता लगाना, निर्यात क्षमता को बढ़ाना, उत्पाद की ऑनलाइन उपस्थिति, सरकार की नीतियों पर सकारात्मक पहल, कौशल विकास के अवसर तथा सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं यथा— वित्तीय सहायता, कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण, विपणन सुविधा, उचित नीति समर्थन, इंफ्रास्ट्रक्चर सपोर्ट इत्यादि भी जलेसर के घंटा घुंघरू उद्योग उद्योग की रीडरज्जु को और मजबूत करने में मील का पत्थर साबित हो सकती हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि इस उद्योग के विकास और विस्तार की अपार संभावनाएं हैं, बशर्ते निर्माता अपने सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान कर सकें और नवाचार, स्थिरता और दक्षता पर ध्यान केंद्रित कर सकें जिससे सही समर्थन और निवेश के साथ, उद्योग फलना-फूलना जारी रह सके और स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान निभता रहे।



निष्कर्ष:-

जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग का समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक महत्व रहा है। उद्योग समय के साथ विकसित हुआ है, और उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार के लिए पारंपरिक तरीकों और तकनीकों को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा गया है। उद्योग ने रोजगार और आय पैदा करके और अन्य संबंधित उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराकर स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उद्योग ने पारंपरिक कौशल और ज्ञान को संरक्षित करने में भी मदद की है और इस क्षेत्र के सामाजिक ताने-बाने में योगदान दिया है। यद्यपि, उद्योग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि अन्य स्रोतों से प्रतिस्पर्धा, उपभोक्ता वरीयताओं को बदलना, पर्यावरण संबंधी चिंताएं और अपशिष्ट प्रबंधन के मुद्दे। उद्योग को प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए बाजार के बदलते रुझानों के अनुकूल होने और टिकाऊ उत्पादन पद्धतियों को अपनाने की जरूरत है। सरकार वित्तीय, तकनीकी और विपणन सहायता, कौशल विकास, नीति समर्थन और बुनियादी ढांचे के समर्थन के माध्यम से उद्योग का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है।

अंत में हम कह सकते हैं कि जलेसर का घंटा घुंघरू उद्योग एक महत्वपूर्ण और अनूठा उद्योग है जिसने स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यद्यपि आज इस उद्योग को कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद सरकार की नीतियों और पहलों के समर्थन जारी है।

सुझाव:- इस उद्योग के समुचित विकास हेतु सुझाव निम्नवत् हो सकते हैं-

प्रथम- उद्योग के पर्यावरणीय प्रभाव और प्रदूषण और अपशिष्ट प्रबंधन के मुद्दों को दूर करने के तरीकों पर और शोध करने की आवश्यकता है।

द्वितीय- उद्योग में नवाचार और विकास के अवसरों की पहचान करने के लिए उपभोक्ता वरीयताओं और बाजार के रुझान पर शोध कर उत्पाद श्रृंखला में विविधता लाने और उसका विस्तार करने के साथ-साथ बदलते बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहना।

तृतीय- वित्तीय और तकनीकी सहायता, कौशल विकास और बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से उद्योग को समर्थन देने के लिए नीतिगत कार्यवाही की नितान्त आवश्यकता है जिससे सूचना, प्रौद्योगिकी और विपणन सहायता तक पहुंच के साथ उद्योग के लिए एक समर्पित सहायता केंद्र की स्थापना शामिल हो सकती है।



चतुर्थ— उद्योग में सतत् और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार, उद्योग और अन्य हितधारकों के बीच अधिक परस्पर सहयोग की आवश्यकता है। परिणामस्वरूप नए अवसर और बाजार बनाने के लिए उद्योग और अन्य क्षेत्रों, जैसे पर्यटन और हस्तशिल्प के बीच साझेदारी और नेटवर्क की स्थापना शामिल हो सकती है। उद्योग की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के प्रयासों की अत्यन्त आवश्यकता है, और उपभोक्ताओं के बीच घंटा घुंघरू उत्पादों की अनूठी और पारंपरिक प्रकृति के बारे में भी जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता को महसूस करते हुए इसमें सांस्कृतिक केंद्रों और संग्रहालयों की स्थापना और पर्यटन और हस्तकला संवर्धन गतिविधियों में उद्योग को शामिल करना हितकारी सकता है।

सिफारिशें:-

जलेसर में घंटा घुंघरू उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था का एक पारंपरिक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसका समुदाय के लिए महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभाव है। उद्योग समय के साथ विकसित हुआ है और विभिन्न चुनौतियों का सामना करना होता है, जिसमें अन्य स्रोतों से प्रतिस्पर्धा, उपभोक्ता वरीयताओं को बदलना और पर्यावरण संबंधी चिंताएं शामिल हैं। हालाँकि, नवाचार, विविधीकरण और सहयोग के माध्यम से विकास और विस्तार के भी अवसर बढ़ जाते हैं। उद्योग की वृद्धि और विकास का समर्थन करने के लिए, नीति निर्माता निम्नलिखित अनुशंसाओं को लागू करने पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर सकते हैं—उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार के लिए क्रेडिट, सब्सिडी और प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुंच सहित उद्योग को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करना, औद्योगिक पार्कों, विपणन और भण्डारण केंद्रों के लिए बुनियादी ढांचे और सुविधाओं का विकास करना, उद्योग के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए टिकाऊ उत्पादन प्रथाओं और अपशिष्ट प्रबंधन उपायों को बढ़ावा देना, बाजार के अनुसार उपभोक्ता वरीयताओं और नए उत्पाद अवसरों की पहचान कर उन्हें तत्काल लागू करना, उद्योग के साथ-साथ पर्यटन और हस्तशिल्प के बीच साझेदारी और नेटवर्क स्थापित करना, सांस्कृतिक केंद्रों और संग्रहालयों की स्थापना और पर्यटन और हस्तकला संवर्धन गतिविधियों में शामिल करने सहित उद्योग की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देना इत्यादि जलेसर के घंटा घुंघरू उद्योग को विकसित करने में सक्षम हो सकते हैं, जिसका स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर निश्चित ही सकारात्मक प्रभाव पड़ने के साथ-साथ क्षेत्रीय जनसमुदाय की अनूठी सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित रखा जा सकता है।

संदर्भ:—

1. लवीश भंडारी, रिकू मुरगई और मार्टिन रैवेलियन : 'बेल्स ऑफ चेंज द घंटा-घुंघरू इंडस्ट्री ऑफ जलेसर' (वर्ल्ड बैंक पॉलिसी रिसर्च, 2006)
2. दीपक कुमार और नवीन कुमार : "ग्रामीण भारत में औद्योगिक क्लस्टर: उत्तर प्रदेश में घंटा घुंघरू उद्योग से साक्ष्य" (जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, 2014)
3. एस.के.सिंह और संजय कुमार : "ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर घंटा-घुंघरू उद्योग का प्रभाव: उत्तर प्रदेश के एटा जिले में जलेसर तहसील का एक केस स्टडी" (इंडियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड डेवलपमेंट, 2018)
4. संजय कुमार सिंह : "जलेसर, उत्तर प्रदेश के घंटा घुंघरू क्लस्टर के विकास में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका" (इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस एंड एडमिनिस्ट्रेशन रिसर्च रिव्यू, 2015)
5. महेश सी. पुरोहित : "भारत में पारंपरिक कारीगर और छोटे उद्यमी: जलेसर, उत्तर प्रदेश का घंटा-घुंघरू उद्योग" (जर्नल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप, 2001)
6. सिंह, एन., और रानी, के.: जलेसर में पारंपरिक बेल मेकिंग (घण्टा घुंघरू) उद्योग: एक भौगोलिक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च एंड प्रैक्टिसेज, (2019)
7. सिंह, एस. : उत्तर प्रदेश के एटा जिले में लघु उद्योगों की स्थिति और समस्याएं। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च, (2015).
8. : उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास निगम जलेसर, एटा।
9. सिंह, एस.पी., और शर्मा, ए : बेल मेटल इंडस्ट्री: उत्तर प्रदेश के एटा जिले की जलेसर तहसील में उद्यमिता विकास का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस रिसर्च, (2015)।
10. माइक्रो, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय। : बेल धातु और पीतल के बर्तन।
11. सिंह, एस.के., और सिंह, एस। : उत्तर प्रदेश के एटा जिले का औद्योगिक परिदृश्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मार्केटिंग एंड टेक्नोलॉजी (2014)।
12. यादव, एस.के., और सिंह, वी.पी. : ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास पर औद्योगीकरण का प्रभाव: उत्तर प्रदेश में जलेसर तहसील का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, (2014)।
13. जिला गजेटियर एटा, 1911।
14. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका – 2020
15. भारत पर्यावरण पोर्टल : पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट एटा जिला।